# रुद्राष्टकं

## रुद्राष्टकं

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं |
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं || 1 ||

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं |
करालं महाकालकालं कृपालुं
गुणागारसंसारपारं नतोऽहं || 2 ||

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं
मनोभूतकोटिप्रभासी शरीरं |
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा
लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगं || 3 ||

चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं
प्रसन्ननं नीलकंठं दयालुं |
मृगाधीशचर्मांबरं मुंडमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि || 4 ||

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखंडं भजे भानुकोटिप्रकाशं |
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं || 5 ||

कलातीतकल्याणकल्पांतकारी
सदासज्जनानंददाता पुरारी |
चिदानंदसंदोहमोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी || 6 ||

न यावदुमानाथपादारविंदं
भजंतीह लोके परे वा नराणां |
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं || 7 ||

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा देव तुभ्यं |
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं
प्रभो पाहि शापान्नमामीश शंभो || 8 ||

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये |
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति || 9 ||

इति श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृतं श्रीरुद्राष्टकं |